Chapter- 9

काबुलीवाला

STUDY NOTES

MIND MAP

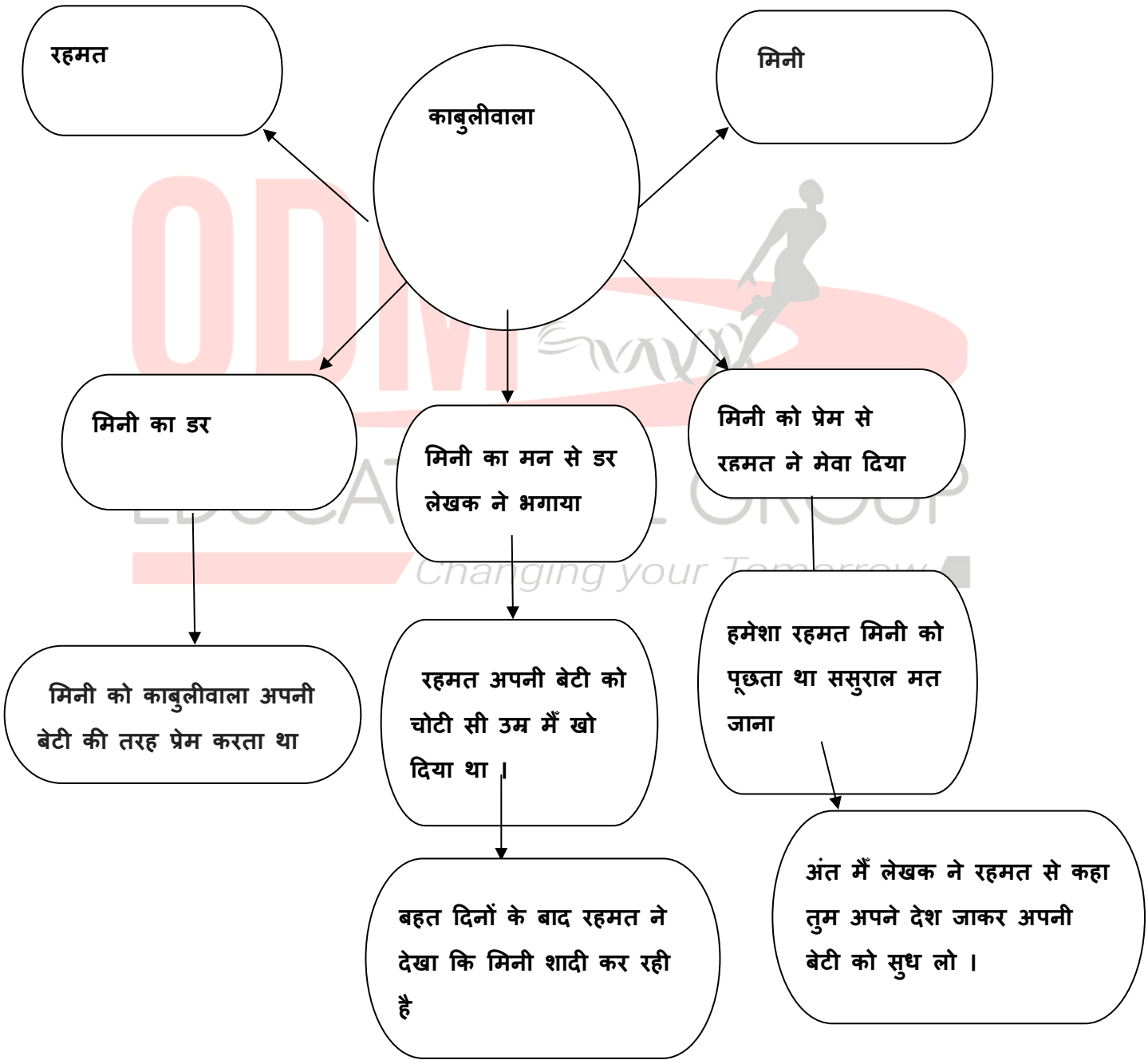

पाठ प्रवेश

- काबुलीवाला' रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। एक दिन एक काबुलीवाले को सड़क पर जाते देख लेखक की पाँच वर्षीय बेटी मिनी ओ काबुलीवाले की आवाज़ देकर उसे बुलात है. परंतु जैसे ही वह उसकी ओर आने लगता है मिनी डरकर अंदर चली जाती है। उसे लगता है कि काबुलीवाला अपने थैले में बच्चों को पकड़कर ले जाता है। लेखक ने मिनी का डर दूर करने के उद्देश्य से उसे काबुलीवाले से मिलाया। धीरे-धीरे मिनी व काबुलीवाले की अच्छी जान पहचान हो गई। वह अकसर मिनी को मेवे दे जाया करता था। वह उससे यह भी कहा करता था कि 'तुम ससुराल मत जाना इस परमिनी उससे उलटा सवाल करती तुम सुसराल कब जाओगे? उस समय वह अबोध बालिका ससुराल से अनभिज्ञ थी। इस तरह वे हँसी-ठिठोली करते रहते। एक दिन रहमत (काबुलीवाला) को दो सिपाही पकड़ कर ले जा रहे थे। पूछने पर पता चला कि उसने अपने पैसे न मिलने पर किसी को चाकू मार दिया था। उसे जाते देख मिनी कहने लगी तुम ससुराल जाओगे? उसकी बात सुनकर रहमत ने कहा वहीं तो जा रहा हूँ। धीरे-धीरे काबुलीवाले की स्मृति सबके जहन से धूमिल हो गई। एक दिन अचानक वह फिर आ जाता है,

पहले तो लेखक उसे पहचान नहीं पाता। जब काबुलीवाला मिनी से मिलने की बात करता है. तो उसके घरवाले आनाकानी करते हैं, परंतु न जाने क्यों लेखक रहमत को मिनी से मिलवा देता है। उसे देखकर रहमत हैरान हो जाता है, क्योंकि अब मिनी पाँच वर्षीय बच्ची नहीं रही, उसका विवाह होने जा रहा था। वह सहसा उससे पूछ बैठता है 'लल्ली सुसराल जा रही हो क्या?' आज मिनी ससुराल का मतलब समझती थी। मिनी को दुल्हन के लिबास में देख रहमत को अपनी बेटी की स्मृति हो आती है और वह अपने देश वापस चला जाता है।

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow

पाठ सार

काबुलीवाला" एक बंगाली लघु 1892 में रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा लिखित कहानी कहानी काबुल, जो कलकत्ता के लिए आता है से एक पश्तून व्यापारी की है। उनका असली नाम अब्दुर रहमान है। वह एक विक्रेता के रूप में काम करता है वह अपनी पत्नी और छोटी बेटी को देखने के लिए वर्ष में एक बार काबुल जाता है। माल बेचने के दौरान, रवींद्रनाथ टैगोर के लेखक के घर पहुंचे,

एक बार। फिर उसकी पांच साल की बेटी, मिनी उसे 'काबुलीवाल्लाह! एक काबुलीवाला ' जब काबिलिवाल्ला मिनी जाने जाते हैं तो वह डरता है क्योंकि वह ढीले कपड़े और एक लंबा पगड़ी पहन रहा है। वह विशाल लग रहा है जब लेखक जानता है कि मिनी डरता है, तो वह उसे उसके साथ पेश करता है काबुलिल्लाह उसे कुछ पागल और किशमिश देता है मिनी अगले दिन से खुश हो जाता है, काबिलिवाला अक्सर उसे दौरा करता है और वह उसे खाने के लिए कुछ देता है वे चुटकुले को दरकिनार करते हैं और हंसी करते हैं और आनंद लेते हैं। वे कंपनी में एक-दूसरे को सहज महसूस करते हैं लेखक उनकी दोस्ती पसंद करते हैं लेकिन मिनी की मां को यह पसंद नहीं काबिलिल्लाह मौसमी सामान बेचता है एक बार जब वह एक ग्राहक को क्रेडिट पर रामपुरी शाल बेचता है। वह पैसे के लिए कई बार पूछता है लेकिन वह भुगतान नहीं करता है। आखिरकार वह शॉल खरीदने से इनकार करते हैं काबिलिल्लाह बहुत गुस्सा हो जाता है और ग्राहक को मारता है। फिर उसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और उसे जेल भेज दिया। वह आठ साल तक जेल में है जब वह पहली बार जेल से मुक्त हो जाता है तो वह मिनी को आश्चर्यजनक रूप से जाने के लिए

जाता है यह शादी का दिन है और उसे उसके पास जाने की अनुमति नहीं है। जब वह लेखक के लिए कागज के एक टुकड़े की उंगली दिखाता है, तो वह मिलिए से मिलने की अनुमति देता है जो शादी की पोशाक में है लेखक जानता है कि काबुलीवाला के पास अपने घर वापस जाने के लिए कोई पैसा नहीं है, इसलिए लेखक प्रकाश और बैंड की तरह शादी के खर्चों में कटौती करता है और काबिलिल्लाह को एक सौ रुपये देता है और उसे काबुल भेजता है। कहानी हमें एक छोटी लड़की और एक बुजुर्ग आदमी की दोस्ती के बारे में बताती है छोटी लड़की छोटी थी और उसके माता-पिता मिनी और काबुलीवाला के बीच की दोस्ती के बारे में चिंतित थे। उन्हें डर था कि कोलीवाला अपनी बेटी को उनसे दूर ले जाएगा। काबुलीवाला और मिनी हर रोज मिलते थे और शुभकामनाएं देते थे।

अचानक एक दिन काबुलीवाला को जेल में ले जाया गया। और उस कुछ वर्षों में मिनी बड़ा हुआ और उसके विवाह का निर्धारण किया गया। और उसके दिमाग वाले दिन काबिलिवाला मिनी से मिलने आया था। लेकिन मिनी उसे बहुत शर्मिंदा था। अपनी दुल्हन की पोशाक में मिनी को देखकर काबुलीवाला ने काबुल में अपनी बेटी को याद किया कहानी गरीबी के कारण लोगों की

दुर्दशा भी दिखाती है अगर काबुलीवाला के पास पर्याप्त पैसा था, तो वह काबुल में अपनी पत्नी और बेटी को छोड़कर भारत नहीं आएगा। लेखक से पता चलता है कि गुस्सा खंडहर किसी को भी। अगर काबुलीवाला ने कथानक पर हाथ नहीं लगाया, तो उसे जेल जाना नहीं पड़ेगा। यह कहानी भी मानवता की भावनाओं से भरा है लेखक शादी के खर्च काट देता है और काबिलिवाल्लाह को मदद करता हैप्रस्तुत कहानी 'काबुलीवाला' रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित है। यह कहानी काबुलीवाले और छोटी बच्ची मिनी के आसपास घूमती है। काबुलीवाला एक पठान है और मिनी एक हिन्दू परिवार से संबंधित है। दोनों के मध्य उत्पन्न स्नेह में धर्म की दीवार का नामोनिशान नहीं है। काबुलीवाला मिनी से ही अपनी पुत्री के स्नेह की पूर्ति करता है। मिनी के लिए वह एक ऐसा मित्र है, जो उसकी सारी बातों को सहर्षता से सुनता है। दोनों के बीच एक अदृश्य घनिष्ट संबंध है। एक अपराधवश काबुलीवाले को जेल जाना पड़ता है। जब वह लंबी सज़ा भुगत कर लौटता है, तो मिनी बड़ी हो चुकी होती है। काबुलीवाले के लिए वह वही छोटी मिनी है परन्तु मिनी के मस्तिष्क से उसका नाम तक मिट जाता है। काबुलीवाले के लिए यह स्थिति दुखदायी है। टैगोर जी ने दोनों के हृदय को बहुत सुंदर रुप में

अभिव्यक्त किया है। यह कहानी अपने में अनेक संदेश लिए हुए है। यह कहानी प्रेम और भाईचारे के संदेश को प्रसारित करती है। धर्म के नाम पर चिल्लाने वालों का यहाँ नाम तक नहीं है। टैगोर जी का लेखन कौशल इस कहानी में चरमौत्कर्ष पर है। एक छोटी कहानी में जीवन के विविध पड़ावों को दिखाना सरल नहीं होता। यह कहानी मन के किसी कोने में अपनी गहरी छाप छोड़ देती है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

****